दव्वपमाणाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया दव्व-पमाणेण केवडिया ? ॥ १ ॥

एदाओ मग्गणाओ सव्वकालमत्थि एदाओ च सव्वकालं णत्थि त्ति णाणाजीव-भंगविचयाणुगमेण आणाविय संपहि तासु मग्गणासु ट्ठिदजीवाणं पमाणपरूवणट्ठं दव्वाणिओगद्दारमागदं । णिरयगदिवयणेण सेसगईणं पडिसेहो कओ । णेरइया त्ति वयणेण णिरयगइसंबद्धणेरइयवदिरित्तदव्वादीणं पडिसेहो कओ। दव्वपमाणेण त्ति वयणेण खेत्तपमाणादीणं पडिसेहो कओ । केवडिया इदि आसंका आइरियस्स ।

असंखेज्जा ॥ २ ॥

संखेज्जाणंताणं पडिसेहट्ठमसंखेज्जवयणं। एवं पि असंखेज्जं तिविहं[1] । तत्थ एदम्हि असंखेज्जे णेरइयरासी ठिदो त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३ ॥

द्रव्यप्रमाणानुगमसे गतिमार्गणानुसार नरकगतिकी अपेक्षा नारकी जीव द्रव्य-प्रमाणसे कितने हैं ? ॥ १ ॥

' ये मार्गणायें सर्वकाल हैं और ये मार्गणायें सर्वकाल नहीं है ' इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगमसे बतलाकर अब उन मार्गणाओंमें स्थित जीवोंके प्रमाणके निरूपणार्थ द्रव्यानुयोगद्वार आया है । ' नरकगति ' वचनसे शेष गतियोंका प्रतिषेध किया है । ' नारकी ' इस वचनसे नरकगतिसे सम्बद्ध नारकियोंके अतिरिक्त अन्य द्रव्यादिकोंका प्रतिषेध किया है । ' द्रव्यप्रमाणसे ' इस प्रकारके वचनसे क्षेत्रप्रमाणादिकोंका प्रतिषेध किया है । ' कितने हैं ' इस प्रकार यह आचार्यकी आशंका है ।

नारकी जीव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात हैं ॥ २ ॥

संख्यात व अनन्त प्रतिषेधकरनेके लिये ' असंख्यात ' वचन आया है । यह असंख्यात भी तीन प्रकार है । उनमेंसे इस असंख्यातमें नारकराशि स्थित है, इस बातके ज्ञापनार्थ उत्तरसूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा नारकी जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणि-योंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३ ॥

---

१ अ. क. प्रत्योः असंखेज्जंतिविहं इति पाठः ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि त्ति वयणेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो, असंखेज्जासंखेज्जस्सेव उवलद्धी जादा', 'असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि समयमात्तसलागभूदाहि णेरइया अवहिरंति ' त्ति वयणादो। तं पि असंखेज्जासंखेज्जयं जहण्णमुक्कस्सं तव्वदिरित्तमिदि तिविहं। तत्थ एदम्हि असंखेज्जासंखेज्जे णेरइया अवट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठं खेत्तपरूवणमागदं—

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेडीओ ॥ ४ ॥

'असंखेज्जाओ सेडीओ' त्ति सुत्तेण जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहो कदो, तत्थ असंखेज्जाणं सेडीणमभावादो। उक्कस्स-मज्झिमअसंखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो ण होदि, तत्थ असंखेज्जाणं सेडीणं संभवादो। एदेसु दोसु असंखेज्जासंखेज्जेसु णेरइया कम्हि अवट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमागदं—

पदरस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५ ॥

एदेण सुत्तेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो, पदरस्सासंखेज्जदिभागस्स उक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जत्तविरोहादो। तं पि मज्झिममसंखेज्जासंखेज्जयमणेय-

---

'असंख्यातसंख्यात' इस वचनसे परीतासंख्यात और युक्तासंख्यातका प्रतिषेध किया है। जिससे केवल असंख्यातासंख्यातकी ही प्राप्ति हुई, क्योंकि, 'समयमात्रशलाकाभूत असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंके द्वारा नारकी जीव अपहृत होते हैं' ऐसा वचन है। वह असंख्यातासंख्यात भी जघन्य, उत्कृष्ट तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमेंसे इस असंख्यातासंख्यातमें नारकी जीव अवस्थित हैं इसके ज्ञापनार्थ क्षेत्रप्ररूपणा प्राप्त होती है।

क्षेत्रकी अपेक्षा नारकी जीव असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण हैं ॥ ४ ॥

'असंख्यात जगश्रेणियां' इस प्रकारके सूत्रसे जघन्य असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, जघन्य असंख्यातासंख्यातमें असंख्यात जगश्रेणियोंका अभाव है। परन्तु इससे उत्कृष्ट और मध्यम असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध नहीं होता, क्योंकि, उनमें असंख्यात जगश्रेणियां संभव हैं। अतः इन दो असंख्यातासंख्यातोंमेंसे नारकी जीव कौनसे असंख्यातासंख्यातमें अवस्थित हैं, इसके ज्ञापनार्थ उत्तर सूत्र आता है—

उक्त नारकी जीव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात जगश्रेणी-प्रमाण हैं ॥ ५ ॥

इस सूत्रसे उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, जगप्रतरके असंख्यातवें भागका उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातपनेसे विरोध है। वह मध्यम असं-

---

१ सू. ख्ती: भावो इति पाठः।

पयारमिदि तण्णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तासिं सेडीणं विक्खंभसूची अंगुलवग्गमूलं बिदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ६ ॥

सूचिअंगुलपढमवग्गमूले सूचिअंगुलस्स बिदियवग्गमूलेण गुणिदे तासिं सेडीणं विक्खंभसूची होदि । गुणिदेणेत्ति णेदं तदियाए एगवयणं, किंतु सत्तमीए एगवयणेण पढमाए एगवयणेण वा होदव्वमण्णहा सुत्तट्ठसंबंधाभावादो । एत्थ सामण्णणेरइयाणं वुत्तविक्खंभसूची चेव णेरइयमिच्छाइट्ठीणं जीवट्ठाणे परूविदा, कधं तेणेदं ण विरुज्झदे? ण विरुज्झदे, आलावभेदाभावादो । अत्थदो पुण भेदो अत्थि चेव, सामण्ण-विसेसविक्खंभसूचीणं समाणत्तविरोहादो । मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची संपुण्णघणंगुलबिदियवग्गमूलमेत्ता किण्ण घेप्पदे ? ण, सामण्णणेरइयाणं परूविदघणंगुलबिदियवग्गमूलविक्खंभसूचिणा एदेण खुद्दाबंधसुत्तेण सह विरोहादो । ण तं पि सुत्तमिदि पच्चवट्ठादुं जुत्तं, खुद्दाबंधव-

---

स्यातासंख्यात भी अनेक प्रकारका है, अतः उसके निर्णयार्थ उत्तरसूत्र कहते हैं—

उन जगश्रेणियोंकी विष्कम्भसूची, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित उसीके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ॥ ६ ॥

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करनेपर उन जगश्रेणियोंकी विष्कम्भसूची होती है । यहां सूत्रमें ' गुणिदेण ' यह पद तृतीयाका एकवचन नहीं है, किन्तु सप्तमीका एक वचन या प्रथमाका एक वचन होना चाहिये; अन्यथा सूत्रके अर्थका सम्बन्ध नहीं बैठता है ।

शंका—यहां जो सामान्य नारकियोंकी विष्कम्भसूची कही गई है वही जीवस्थानमें नारकी मिथ्यादृष्टियोंकी कही गई है, उसके साथ यह विरोधको प्राप्त कैसे नही होती ?

समाधान—जीवस्थान कथनसे इस कथनका कोई विरोध नहीं है । क्योंकि यहां आलापभेदका अभाव है । परमार्थसे तो भेद है ही, क्योंकि, सामान्य व विशेष विष्कम्भसूचियोंमें समानताका विरोध है ।

शंका—मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची सम्पूर्ण घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वैसा माननेपर उसका सामान्य नारकियोंकी घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलमात्र विष्कम्भसूचीको प्ररूपित करनेवाले इस क्षुद्रबन्धसूत्रके साथ विरोध होता है । वह भी सूत्र है इस प्रकार निश्चय करना भी उचित नहीं है,

संघारस्स तस्स एदम्हादो पहाणत्ताभावादो। तम्हा एत्थतणविक्खंभसूची संपुण्णघणंगुल-बिदियवग्गमूलमेत्ता, मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची पुण किंचूणघणंगुलबिदियवग्गमूलमेत्ता त्ति घेत्तव्वं। एत्थ विक्खंभसूची-अवहारकालदव्वाणं खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि परूवणा कायव्वा।

एवं पढमाए पुढवीए णेरइया ॥ ७ ॥

सामण्णणेरइयाणं पमाणं कधं पढमाए पुढवीए णेरइयाणं होदि? ण, दोण्हमालावाणं भेदाभावादो। अत्थदो पुण अत्थि भेदो, अण्णहा छण्णं पुढवीणं णेरइयाणमभावप्पसंगादो। तम्हा पुव्विल्लविक्खंभसूची एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणा[1] पढमपुढविणेरइयाणं विक्खंभसूची होदि। सेसं जाणिदूण वत्तव्वं।

बिदियाए जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया दव्वपमाणेण केवडिया? ॥ ८ ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्जाणंतसंखाणमवेक्खदे। एत्थ तिसु वि संखासु

क्योंकि, क्षुद्रबन्धके उपसंहारभूत उस सूत्रके इस सूत्रकी अपेक्षा प्रधानताका अभाव है इसलिये यहांकी विष्कम्भसूची सम्पूर्ण घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण होती है, परन्तु मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची कुछ कम घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। यहांपर विष्कम्भसूची व अवहारकाल द्रव्योंका खण्डित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्प, इनके द्वारा प्ररूपण करना चाहिये। (देखिये जीवस्थान-द्रव्यप्रमाणानुगम, सूत्र १७ की टीका)।

सामान्य नारकियोंके समान ही प्रथम पृथिवीके नारकियोंका द्रव्यप्रमाण है ॥ ७ ॥

शंका—सामान्य नारकियोंका जो प्रमाण है वह प्रथम पृथिवीके नारकियोंका कैसे हो सकता?

समाधान—नहीं, क्योंकि, दोनोंके आलापोंमें कोई भेद नहीं है। परन्तु परमार्थसे भेद है ही, अन्यथा छह पृथिवियोंके नारकियोंके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है। इस कारण पूर्व विष्कम्भसूची एक रूपके असंख्यातवें भागसे हीन होकर प्रथम पृथिवीके नारकियोंकी विष्कम्भसूची होती है। शेष जानकर कहना चाहिये।

द्वितीय पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक प्रत्येक पृथिवीके नारकी द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? ॥ ८ ॥

यह आशंकासूत्र संख्यात, असंख्यात और अनन्त संख्याकी अपेक्षा रखता है।

---

1 अ. प्रती–भागेणूण इत्येतत्।

एदीए संखाए बिदियादिछप्पुढविणेरइया अवट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि। अथवा, बिदियादिछप्पुढविणेरइया णाणंता, ओघणेरइयाणमणंतसंखाभावादो। तदो दोण्णं संखाणं मज्झे एदीए संखाए छप्पुढविणेरइया अवट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमागदं–

असंखेज्जा ॥ ९ ॥

एदेण[1] असंखेज्जवयणेण संखेज्जस्स पडिसेहो कदो। असंखेज्जं पि परित्त-जुत्त-असंखेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं। एत्थ एदम्हि असंखेज्जे छप्पुढविदव्वमट्ठिदमिदि जाणावणट्ठं कालपमाणपरूवणसुत्तमागदं–

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १० ॥

एदेण असंखेज्जासंखेज्जवयणेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो। एदं पि असंखेज्जासंखेज्जं जहण्णुक्कस्स-तव्वदिरित्तभेएण तिविहं। एत्थ एदम्हि संखाविसेसे छप्पुढविदव्वं होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरं खेत्तपमाणपरूवणसुत्तमागदं–

इन तीनों ही संख्याओंमेंसे इस संख्यामें द्वितीयादि छह पृथिवियोंके नारकी अवस्थित है, इसके ज्ञापनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं। अथवा, द्वितीयादि छह पृथिवियोंके नारकी अनन्त नहीं हैं, क्योंकि, सामान्य नारकियोंकी अनन्त संख्याका अभाव है। इसलिये दो संख्याओंके मध्यमें इस संख्यामें छह पृथिवियोंके नारकी अवस्थित हैं, इसके ज्ञापनार्थ उत्तर सूत्र आया है––

द्वितीयादि छह पृथिवियोंके नारकी द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात हैं ॥ ९ ॥

इस 'असंख्यात' इस वचनसे संख्यातका प्रतिषेध किया गया है। असंख्यात भी परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात और असंख्यातासंख्यातके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमेंसे इस असंख्यातराशिमें छह पृथिवियोंके नारकियोंकी संख्याका अवस्थान है, इसके ज्ञापनार्थ काल-प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाला सूत्र आया है––

द्वितीय पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक प्रत्येक पृथिवीके नारकी कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंसे अपहृत होते हैं ॥ १० ॥

इस 'असंख्यातासंख्यात' वचनसे परीतासंख्यात और युक्तासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है। यह असंख्यातासंख्यात भी जघन्य, उत्कृष्ट और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमेंसे इस संख्याविशेषमें छह पृथिवियोंका द्रव्य है, इसके ज्ञापनार्थ आगला क्षेत्रप्रमाण-प्ररूपणासूत्र आया है–––

---

[1] मु. प्रती एदेण पाठो णत्थि।

खेत्तेण सेडीए असंखेज्जदिभागो ॥ ११ ॥

एदेण जगसेडीदो उवरिमवियप्पाणं पडिसेहो कदो । अवसेसदोसंखाणं मज्झे एदीए संखाए ट्ठिदमिदि जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

तिस्से सेडीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ ॥ १२ ॥

एदेण सूचि अंगुलादिहेट्ठिमवियप्पाणं पडिसेहो कदो, सूचिअंगुलादिहेट्ठिमसंखाए असंखेज्जजोयणत्ताभावादो । तं पि तव्वदिरित्तअसंखेज्जासंखेज्जमसंखेज्जजोयणकोडिमेत्तं होदूण अणेयवियप्पं । तण्णिण्णयकरणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

पढमादियाणं सेडिवग्गमूलाणं संखेज्जाणमण्णोण्णब्भासो ॥ १३ ॥

सेडिपढमवग्गमूलमादिं कादूण जाव बारसम-दसम-अट्ठम-छट्ठ-तदिय-बिदियवग्गमूलो'त्ति पुध पुध गुणगारगुणिज्जमाणक्कमेणा[2] वट्ठिदछण्हं वग्गपदीणमण्णोण्णब्भासे कदे

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वितीय पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक प्रत्येक पृथिवीके नारकी जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ ११ ॥

इस सूत्रके द्वारा जगश्रेणीसे उपरिम विकल्पोंका प्रतिषेध किया गया है । अवशेष दो संख्याओंके मध्यमें इस संख्यामें उक्त द्रव्य स्थित है, इसके ज्ञापनार्थ उत्तरसूत्र कहते हैं—

जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण उस श्रेणीका आयाम (लम्बाई) असंख्यात योजनकोटि है ॥ १२ ॥

इस सूत्रके द्वारा सूच्यंगुलादि अधस्तन विकल्पोंका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, सूच्यंगुलादिरूप अधस्तन संख्यामें असंख्यात योजनपनेका अभाव है । वह तद्व्यतिरिक्त असंख्यातासंख्यात असंख्यात योजनकोटिप्रमाण होकर अनेक विकल्परूप है, अतः उसका निर्णय करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

पूर्वोक्त असंख्यात कोटि योजनोंका प्रमाण प्रथमादिक संख्यात जगश्रेणीवर्गमूलोंके परस्पर गुणनफलरूप है ॥ १३ ॥

जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर उसके बारहवें, दशवें, आठवें छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूल तक पृथक् पृथक् गुणकार व गुण्य क्रमसे अवस्थित छह वर्ग-

---

१ मु. प्रती—पढमवूको इति पाठः । २ मु. प्रती—णागंकमेणा— इति पाठः ।

जहाकमेण बिदिय-तदिय-चउत्थ-पंचम छट्ठ-सत्तमपुढविदव्वपमाणं होदि । कधमेत्तियाणं चेव सेडिवग्गमूलाणमण्णोण्णब्भासादो एक्किस्से एक्किस्से पुढवीए दव्वं होदि त्ति णव्वदे ? ण, आइरियपरंपरागदअविरुद्धोवदेसेण तदवगमादो । उत्तं च–

बारस दस अट्ठेव य मूला छ त्तिग दुगं च णिरएसु ।
एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु ॥ १ ॥

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १४ ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्जाणंताणि अवेक्खदे ।

अणंता ॥ १५ ॥

एदेण संखेज्ज-असंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । तं च अणंतं परित्त-जुत्त-अणंताणंतभेएण तिवियप्पं । तत्थ एदम्हि अणंते तिरिक्खा ट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुवरिल्लसुत्तमागदं—

राशियोंका परस्पर गुणा करनेपर यथाक्रमसे द्वितीय, तृतीय. चतुर्थ, पंचम, षष्ठ और सप्तम पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण होता है ।

शंका—इतने ही जगश्रेणीवर्गमूलोंके परस्पर गुणनसे इस इस पृथिवीका द्रव्य होता है, यह कैसे जाना जाता है ? ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, आचार्यपरम्परागत अविरुद्ध उपदेशसे उसका ज्ञान प्राप्त है । कहा भी है ।

नरकोंमें द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्यप्रमाण लानेके लिये जगश्रेणीका बारहवां, दशवां, आठवां, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल अवहारकाल है । तथा देवोंमें सानत्कुमारादि पांच कल्पयुगलोंका द्रव्यप्रमाण लानेके लिये जगश्रेणीका ग्यारहवां. नौवां, सातवां पांचवां और चौथा वर्गमूल अवहारकाल है ॥ १ ॥

तिर्यंचगतिमें तिर्यंच जीव द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ १४ ॥

यह आशंकासूत्र संख्यात असंख्यात और अनन्तकी अपेक्षा रखता है ।

तिर्यंचगतिमें तिर्यंच जीव द्रव्यप्रमाणसे अनन्त हैं ॥ १५ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध किया गया है । वह अनन्त भी परीतानन्त, युक्तानन्त और अनन्तानन्तके भेदसे तीन प्रकारका है । उनमेंसे इस अनन्तमें तिर्यंच जीव स्थित हैं इसके ज्ञापनार्थ उपरिम सूत्र आया है—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ १६ ॥

किमट्ठमणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि तिरिक्खा ण अवहिरिज्जंति? अतीदकालग्गहणादो। अवहरिदे संते को दोसो ? ण, भव्वजीवाणं सव्वेसिं वोच्छेद-प्पसंगादो। एदेण परित्त-जुत्ताणंताणं पडिसेहो कदो। अणंताणंतं पि जहण्णुक्कस्स-तव्वदिरित्तभेएण तिविहं होदि। तत्थ एदम्हि अणंताणंते तिरिक्खा ट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठ-मुवरिल्लिसुत्तमागदं—

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १७ ॥

एदेण जहण्णअणंताणंतस्स पडिसेहो कदो। कुदो ? तत्थ अणंताणंतलोगाणम-भावादो। एदं पि कधं णव्वदे? लोगेण जहण्णे अणंताणंते भागे हिदे लद्धम्मि अणंता-

---

तिर्यंच जीव कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंसे अपहृत नहीं होते हैं ॥ १६ ॥

शंका—तिर्यंच जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंसे क्यों नहीं अपहृत होते ?

समाधान—क्योंकि, यहां अतीत कालका ग्रहण किया गया। (देखो जीवस्थान-द्रव्यप्रमाणानुगम, पृ. २९)।

शंका—अनन्तानन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंसे इनके अपहृत होनेपर कौनसा दोष आता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ऐसा होनेपर सब भव्य जीवोंके व्युच्छेदका प्रसंग आता है।

इस सूत्रके द्वारा परीतानन्त और युक्तानन्तका प्रतिषेध किया गया है। अनन्तानन्त भी जघन्य, उत्कृष्ट और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकार है। उनमेंसे इस अनन्तानन्तमें तिर्यंच जीव स्थित हैं, इसके ज्ञापनार्थ उपरिम सूत्र प्राप्त होता है—

तिर्यंच जीव क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ १७ ॥

इस सूत्रके द्वारा जघन्य अनन्तानन्तका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, जघन्य अनन्तानन्तमें अनन्तानन्त लोकोंका अभाव है।

शंका—यह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, लोकका जघन्य अनन्तानन्तमें भाग देनेपर लब्ध राशिमें

णंतसंखाभावादो। उक्कस्साणंताणंतस्स वि पडिसेहो कदो, अणंताणंताणि सव्वपज्जयपढम-वग्गमूलाणि त्ति अभणिदूण अणंताणंता लोगा त्ति णिद्देसादो।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १८ ॥

एवमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्ज-अणंताणि अवेक्खदे[1]।

असंखेज्जा ॥ १९ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो, असंखेज्जम्मि तदुभयसंभवविरोहादो। तं पि असंखेज्जं परित्त-जुत्त-असंखेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं। तत्थ इमम्मि असंखेज्जे एदेसिमवट्ठाणमिदि जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं--

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण[2] ॥ २० ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो, तत्थ असंखेज्जासंखेज्जाणं

अनन्तानन्त संख्याका अभाव होता है।

उत्कृष्ट अनन्तानन्तका भी प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, 'अनन्तानन्तका अर्थ सर्व पर्यायोंके प्रथम वर्गमूल' ऐसा न कहकर 'अनन्तानन्त लोक' ऐसा निर्देश किया है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती और पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ॥ १८ ॥

यह आशंकासूत्र संख्यात असंख्यात और अनन्तकी अपेक्षा करता है।

उक्त तिर्यंच द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात हैं ॥ १९ ॥

इसके द्वारा संख्यात व अनन्तका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, असंख्यातमें संख्यात व अनन्त इन दोनोंकी संभावनाका विरोध है। वह असंख्यात भी परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात और असंख्यातासंख्यातके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमेंसे इस असंख्यातमें उक्त जीवोंका अवस्थान है, इसके ज्ञापनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

उक्त चारों तिर्यंच जीव कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंके अपहृत होते हैं ॥ २० ॥

इस सूत्रके द्वारा परीतासंख्यात और युक्तासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है,

---

१ प्रतिषु 'अवेक्खदे' इति पाठः। २ अ. क. प्रत्योः 'कालेण' इति पाठो नास्ति।

ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो। एदेण चेव जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स वि पडिसेहो कदो। कुदो? तत्थ वि असंखेज्जासंखेज्जाणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो। अवसेसेसु दोसु असंखेज्जासंखेज्जेसु कम्हि असंखेज्जासंखेज्जे इमं होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि---

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणि-पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण संखेज्जगुणहीणेण कालेण संखेज्जगुणेण कालेण असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ २१ ॥

बेछप्पण्णंगुलसदवग्गपमाणदेवअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे पंचिंदियतिरिक्खाण अवहारकालो होदि। तम्हि चेव देवअवहारकाले तप्पाओग्गसंखेज्जरूवेहि भागे हिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि। सो पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणमवहारकालो होदि। देवावहारकाले संखेज्जरूवेहि गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणमवहारकालो होदि। देवअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे

क्योंकि, उन दोनोंमें असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंका अभाव है। इस सूत्रसे ही जघन्य असंख्यातासंख्यातका भी प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, जघन्य असंख्यातासंख्यातमें असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंका अभाव है। अवशेष दो असंख्यातासंख्यातोंमेंसे किस असंख्यातासंख्यातमें यह संख्या है, इसके ज्ञापनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी और पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवोंके द्वारा क्रमशः देवअवहारकालसे असंख्यातगुणे हीन कालसे, संख्यातगुणे हीन कालसे, संख्यातगुणे कालसे और असंख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ २१ ॥

दो सौ छप्पन सूच्यंगुलके वर्गप्रमाण देवअवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करनेपर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका अवहारकाल होता है। उसी देवअवहारकालमें तत्प्रायोग्य संख्यात रूपोंका भाग देनेपर प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग आता है। वह पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। देवअवहारकालको संख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी जीवोंका अवहारकाल होता है। तथा देवअवहारकालमें आवलीके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर प्रतरां-

हिदे पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । सो पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणमव-हारकालो होदि । एदे अवहारकाले जहाकमेण सलागभूदे ट्ठविय पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी- पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तपमाणेण जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाओ जगपदरं च जुगवं समप्पंति । तत्थ एगवारमवहि-रिदपमाणं जहाकमेण पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिणीओ पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता[1] च होंति त्ति वुत्तं होदि । एदेण एदेसिं जगपदरस्स असंखेज्जदिभागत्तपरूवएण सुत्तेण उक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो । ण च तव्वदिरित्तस्स असंखेज्जासंखेज्जस्स सव्वस्स गहणं, तत्थतणसव्ववियप्पाणं पडिसेहं काऊण तत्थेक्कवियप्पस्सेव णिण्णयसरूवेण परूविदत्तादो ।

मणुसगदीए मणुस्स मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ २२ ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्ज-अणंतावेक्खं । सेसं सुगमं ।

असंखेज्जा ॥ २३ ॥

गुलका असंख्यातवां भाग आता है । वह पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंको यथाक्रमसे शलाका रूपसे स्थापित कर पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी और पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके प्रमाणसे शलाकायें और जगप्रतर एक साथ समाप्त होते हैं । वहां एक बार अपहृत प्रमाण अर्थात् अपने-अपने भागहारका जगप्रतरमें भाग देने पर जो संख्या प्राप्त हो तत्प्रमाण यथाक्रमसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी और पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव होते हैं, यह उक्त कथनका अभिप्राय है । इन जीवोंके जगप्रतरके असंख्यातवें भागपनेका प्ररूपण करनेवाले इस सूत्रके द्वारा उत्कृष्ट असंख्या-तासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है । और इससे तद्व्यतिरिक्त असंख्यातासंख्यातका भी ग्रहण नहीं होता, क्योंकि, इस सूत्र द्वारा उसके सब विकल्पोंका प्रतिषेध करके उनमेंसे एक विकल्पका ही निर्णयरूपसे निरूपण किया गया है ।

मनुष्यगतिमें मनुष्य और मनुष्य अपर्याप्त द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ॥ २२ ॥

यह आशंकासूत्र संख्यात, असंख्यात व अनन्तकी अपेक्षा रखता है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

मनुष्य और मनुष्य अपर्याप्त द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात हैं ॥ २३ ॥

---

१ अ. स. प्रत्योः 'अपज्जत्ता ' इतिपाठः ।

एदेण वयणेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो, पडिवक्खणिराकरणेण सवक्ख-पदुप्पायणादो। तं पि असंखेज्जं तिवियप्पमिदि कट्टु इदमिदि णिण्णओ णत्थि। इदं चेव होदि त्ति णिण्णयउप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ २४ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो, पडिवक्खणिसेहं काऊण असंखेज्जासंखेज्जवयणस्स सवक्खस्स पदुप्पायणादो[1]। तं पि जहण्णुक्कस्स-तव्वदिरित्तभेएण तिविहमिदि कट्टु ण तत्थ णिच्छओ अत्थि तस्स णिच्छउप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण सेडीए असंखेज्जदिभागो ॥ २५ ॥

एदेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो, सेडीए असंखेज्जदिभागस्स

इस वचनसे संख्यात व अनन्तका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, प्रतिपक्षका निराकरण करनेसे अपने पक्षका प्रतिपादन होता है। वह असंख्यात भी तीन प्रकारका है, ऐसा समझकर उनमेंसे 'यह असंख्यात है' इस प्रकार निर्णय नहीं है, अतः 'यही असंख्यात है' इसका निर्णय करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मनुष्य और मनुष्य अपर्याप्तक कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंसे अपहृत होते हैं ॥ २४ ॥

इस सूत्रके द्वारा परीतासंख्यात और युक्तासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, प्रतिपक्षका निषेध करके असंख्यातासंख्यात रूप स्वपक्षका निरूपण करना है। वह असंख्यातासंख्यात भी जघन्य, उत्कृष्ट और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है, ऐसा समझकर उनमें से किसी एकका विशेष निश्चय नहीं है। अतः उक्त तीन भेदोंमेंसे विशेषके निश्चयोत्पादनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा मनुष्य व मनुष्य अपर्याप्त जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ २५ ॥

इस सूत्रके द्वारा उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि

---

१ म. सवक्खपदुप्पायणादो इति पाठः।

रूवूणपरित्ताणंतत्थविरोहादो[1] । सेसेसु दोसु एक्कस्स अवणयणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तिस्से सेडीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ ॥ २६ ॥

एदेण जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो । कुदो ? तत्थ असंखेज्जाणं जोयणकोडीणमभावादो । असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ वि अणेयवियप्पाओ त्ति काऊण णिच्छयाभावादो तत्थ सुट्ठु णिच्छयुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

मणुस-मणुसअपज्जत्तएहि रूवं रूवापक्खित्तएहि सेडी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ २७ ॥

सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं तस्सेव तदियवग्गमूलेण गुणिय सलागभूदं ठविय रूवाहियमणुस्सरासिपमाणेण सेडि अवहिरिज्जदि । किमट्ठं रूवस्स पक्खेवो कीरदे ? कदजुम्माए सेडिए तेजोजमणुसरासिम्हि अवहिरिज्जमाणे अवहारसलागमेत्तरूवाण-

जगश्रेणीके असंख्यातवें भागको एक कम परीतानन्त रूप अर्थ करनेमें विरोध है । अब शेष दो असंख्यातासंख्यातोंमेंसे एकका निषेध करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

उस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणी अर्थात् पंक्तिका आयाम असंख्यात योजनकोटि है ॥ २६ ॥

इस वचनके द्वारा जघन्य असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि उसमें असंख्यात योजनकोटियोंका अभाव है । असंख्यात योजनकोटियोंके भी अनेक विकल्प होते हैं ऐसा समझकर उनमेंसे किस विकल्पको ग्रहण करना है इस प्रकार निश्चय का अभाव होनेसे उनमें भले प्रकार निश्चयोत्पादनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं--

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको उसके ही तृतीय वर्गमूलसे गुणित करनेपर जो लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित कर रूपाधिक मनुष्यों और रूपाधिक मनुष्य अपर्याप्तों द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ २७ ॥

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको उसके तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके लब्ध राशिको शलाकारूप स्थापित कर रूपाधिक मनुष्यप्रमाणसे जगश्रेणी अपहृत होती है ।

शंका—रूपका प्रक्षेप किसलिये किया जाता है ?

समाधान—चूंकि जगश्रेणी कृतयुग्म राशिरूप है । अतएव उसमेंसे तेजोजराशिरूप मनुष्यराशिके अपहृत करनेपर अवहारशलाकामात्र शेष रहे रूपोंको घटानेके

१ ' मु. प्रतौ परीताणंतत्थविरोहादो ' इति पाठः ।

मुव्वरंताणमवणयणट्ठं । तं चेव सलागरासिं ठविय रूवाहियमणुस्सपज्जत्तरूवाहियमणुस-अपज्जत्तरासिणा अवहिरदि । किमट्ठं रूवाहियमणुस्सपज्जत्तरासी पक्खिप्पदे ? मणुस-अपज्जत्तरासिमाणेण[1] जगसेडीए अवहिरिज्जमाणाए सलागरासिमेत्तरूवाहियमणुसपज्ज-त्तरासिस्स उव्वरंतस्स अवणयणट्ठं ।

मणुस्सपज्जत्ता मणुसिणीओ दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ २८ ॥

सुगमं ।

कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ॥ २९ ॥

एवं सामण्णेण जदि वि सुत्ते वुत्तं तो वि आइरियपरंपरागदेण गुरूवदेसेण अवि-रुद्धेण पंचमवग्गस्स घणमेत्तो मणुसपज्जत्तरासी होदि त्ति घेतव्वो । तस्स पमाणमेदं-७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ । एत्थ गाहा—

लिये उसमें रूपका प्रक्षेप किया जाता है । (इन राशियोंके लिये देखो पुस्तक ३, पृ. २४९) ।

उसी शलाकाराशिको स्थापित कर रूपाधिक मनुष्य पर्याप्त राशिसे अधिक मनुष्य अपर्याप्त राशिसे जगश्रेणी अपहृत होती है ।

शंका—रूपाधिक मनुष्य पर्याप्त राशिका प्रक्षेप किस लिये किया जाता है ?

समाधान—मनुष्य अपर्याप्त राशिके मानसे जगश्रेणीके अपहृत करनेपर शलाका-राशिमात्र शेष रूपाधिक मनुष्यराशिको घटानेके लिये उक्त राशिका प्रक्षेप किया जाता है ।

मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं ? ॥ २८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे अर्थात् छह वर्गोंके ऊपर तथा सात वर्गोंके नीचे अर्थात् छठे और सातवें वर्गके बीचकी संख्याप्रमाण मनुष्यपर्याप्त व मनुष्यनियां हैं ॥ २९ ॥

इस प्रकार यद्यपि सामान्यसे सूत्र में कहा है, तथापि आचार्यपरम्परासे आये हुए गुरु के अविरुद्ध उपदेशसे पंचम वर्गके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि है, इस प्रकार ग्रहण करना चाहिये । उसका प्रमाण यह है—७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ । यहां गाथा—

---

१ मु. प्र वी राशिपमाणेण इति पाठः ।

तललीनमधुगविमलं धूमसिलागाविचोरभयमेरू ।
तटहरिखझसा[1] होंति हु माणुसपज्जत्तसंखंका[2] ॥ २ ॥

एसो उवदेसो कोडाकोडाकोडाकोडिए हेट्ठदो त्ति सुत्तेण कधं ण विरुज्झदे ? ण, एगकोडाकोडाकोडाकोडिमादिं कादूण जाव रूवूणदसकोडाकोडाकोडाकोडि त्ति एदं सव्वं पि कोडाकोडाकोडाकोडि त्ति गहणादो । ण च एदस्स ट्ठाणस्सुक्कस्सं वोलेदूण मणुसपज्जत्तरासी ट्ठिदा, अट्ठण्हं कोडाकोडाकोडाकोडीणं हेट्ठदो तस्स अवट्ठाणदंसणादो ।

तकारादि अक्षरोंसे सूचित क्रमशः छह, तीन, तीन, शून्य, पांच, नौ, तीन चार, पांच, तीन, नौ, पांच, सात, तीन, तीन, चार, छह, दो, चार, एक पांच, दो, छह, एक, आठ, दो, दो, नौ, और सात ये मनुष्य पर्याप्त राशिकी संख्याके अंक हैं ॥ २ ॥

विशेषार्थ—किस अक्षरसे किस अंकका बोध होता है, इसके परिज्ञानार्थ गोम्मटसार (जीवकाण्ड) में आई हुई इसी गाथाकी (१५८) सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका हिन्दी टीकामें यह गाथा उद्धृत पायी जाती है[3]—

कटपयपुरस्थवर्णैर्नवनवपंचाष्टकल्पितैः क्रमशः ।
स्वरञनशून्यं संख्या मात्रोपरिमाक्षरं त्याज्यम् ॥

अर्थात् क-ख इत्यादि नौ अक्षरोंसे क्रमशः एक–दो आदि नौ संख्या तक ग्रहण करना चाहिये। जैसे—क ख ग घ ङ च छ ज झ । इसी प्रकार ट–ठ इत्यादिसे भी एक-दो
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
दो क्रमसे नौ तक, प से म तक पांच अक्षरोंसे पांच तक, और य से ह तक आठ अक्षरोंसे क्रमशः एक-दो आदि आठ तक अंकोका ग्रहण करना चाहिये । स्वर, ञ और न शून्यके सूचक हैं । मात्रा और उपरिम अक्षरको छोडना चाहिये, अर्थात् उससे किसी अंकका बोध नहीं होता ।

शंका—यह उपदेश 'कोडाकोडाकोडाकोडीसे नीचे' इस सूत्रसे कैसे विरोधको प्राप्त नहीं होता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक कोडाकोडाकोडाकोडीसे लेकर एक कम दश कोडाकोडाकोडाकोडी तक इस सबको भी कोडाकोडाकोडाकोडीपदसे ग्रहण किया गया है । और इस स्थानके उत्कृष्टका उलंघन कर मनुष्य पर्याप्त राशि स्थित नहीं है, क्योंकि, उसका अवस्थान आठ कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे देखा जाता है ।

---

१ अ. आ. प्रत्योः कखसा इति पाठः । २ कोडाकोडिम्मि इति पाठः

३ गो. जी. १५८

एदस्स तिण्णि चदुब्भागा मणुसिणीओ, एगो[1] चदुब्भागो पुरिस-णवुंसयरासी होदि। सहीणबुद्धीए[2] पुण जोइज्जमाणे एदेण सुत्तेण सह वक्खाणाइरिएहि परूविदमणुसपज्जत्तरासिपमाणं णियमेण विरुज्झदे, कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो त्ति सुत्तम्मि एगवयणणिद्देसादो। ण च ट्ठाणसण्णा संखेज्जे[3] वट्टदे जेण णवण्हं कोडाकोडाकोडाकोडीणं कोडाकोडाकोडाकोडित्तं होज्ज, विरोहादो। किं च ण वक्खाणाइरियपरूविदं मणुस्सपज्जत्तरासिपमाणं होदि, मणुसखेत्तम्मि तस्स तत्तीए[4] अभावादो, एदम्हादो सत्तगुणसव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवाणं पि जोयणलक्खम्मि अवट्ठाणाभावादो च। सेसं सुगमं।

देवगदीए देवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ३० ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्जाणंतालंबणं।

असंखेज्जा ॥ ३१ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो,

पर्याप्त मनुष्य राशिके चार भागोंमेंसे तीन भागप्रमाण मनुष्यनियां हैं और एक चतुर्थांश पुरुष व नपुंसक राशि है। किन्तु स्वाधीन बुद्धिसे देखनेपर अर्थात् स्वतंत्रतासे विचार करनेपर इस सूत्रके साथ व्याख्यानाचार्यों द्वारा निरूपित मनुष्य पर्याप्त राशिका प्रमाण नियमसे विरोधको प्राप्त होता है, क्योंकि, 'कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे' इस प्रकार सूत्रमें एक वचनका निर्देश किया गया है। और स्थानसंज्ञा संख्यातमें है नहीं, जिससे नौ कोडाकोडाकोडाकोडियोंका कोडाकोडाकोडाकोडीपना हो सके, क्योंकि ऐसा माननेमें विरोध है। दूसरीबात यह है कि व्याख्यानाचार्यों द्वारा प्ररूपित मनुष्य पर्याप्त राशिका प्रमाण हो नहीं सकता। क्योंकि मनुष्यक्षेत्रमें उक्त मनुष्यराशिकी उतनी होनेका अभाव है। तथा इस राशिसे सातगुणे सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवोंका भी एक लाख योजनमें अवस्थानका अभाव होता है। (विशेष जाननेके लिये देखो पुस्तक ३, पृ. २५८ का विशेषार्थ)। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

देवगतिमें देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ॥ ३० ॥

यह आशंकासूत्र संख्यात, असंख्यात व अनन्तका अवलम्बन करनेवाला है।

देवगतिमें देव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात हैं ॥ ३१ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात व अनन्तका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि—

---

१ अ. अ. प्रत्योः 'एगो' इति पाठः। २ अ. क. प्रत्योः सहिणबुद्धीए इति पाठः।

३ अ. क प्रतौः संखेज्जा इति पाठः। ४ क. प्रतौ वत्तीए इति पाठः।

निरस्यन्ती परस्यार्थं स्वार्थं कथयति श्रुतिः ।
तमो विधुन्वती भास्यं यथा भासयति प्रभा ॥ ३ ॥

इदि वयणादो । तं पि असंखेज्जं परित्त-जुत्त-असंखेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं । तत्थ एदम्हि असंखेज्जे देवाणमवट्ठाणमिदि जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३२ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो। पदरावलियाए असंखेज्जासंखेज्जाणमोसप्पिणि-उस्सप्पिणीण[2] सब्भावादो जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स वि पडिसेहो कदो । इदरेसु दोसु एक्कस्स गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

खेत्तेण पदरस्स बेछप्पण्णंगुलसदवग्गपडिभाएण ॥ ३३ ॥

बेछप्पण्णंगुलसदवग्गो पंचसट्ठिसहस्स-पंचसद-छत्तीसपदरंगुलाणि । जगपदरस्स एदेण पडिभाएण देवरासी होदि । एदेण वयणेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहं

जिस प्रकार प्रभा अंधकारको नष्ट करती हुई प्रकाशनीय पदार्थका प्रकाशन करती है, उसी प्रकार श्रुति परके अभीष्टका निराकरण करती है और अपने अभीष्ट अर्थको कहती है ॥ ३ ॥

इस प्रकारका वचन है । वह असंख्यात भी परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात और असंख्यातासंख्यातके भेदसे तीन प्रकारका है । अतः उनमेंसे इस असंख्यातमें देवोंका अवस्थान है ऐसा जतलानेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं ।

देव कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंसे अपहृत होते हैं ॥ ३२ ॥

इस सूत्र द्वारा परीतासंख्यात और युक्तासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है । प्रतरावलीमें असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंका सद्भाव होनेसे जघन्य असंख्यातासंख्यातका भी प्रतिषेध किया गया है । अब अन्य दो असंख्यातासंख्यातोंमेंसे एकके ग्रहण करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं--

क्षेत्रकी अपेक्षा देवोंका प्रमाण जगप्रतरके दो सौ छप्पन अंगुलोंके वर्गरूप प्रतिभागसे प्राप्त होता है ॥ ३३ ॥

दो सौ छप्पन अंगुलोंका वर्ग पैंसठ हजार पांच सौ छत्तीस प्रतरांगुलप्रमाण होता है । जगप्रतरके इस प्रतिभागसे देवराशि होती है । अर्थात् दो सौ छप्पन सूच्यंगुलोंके वर्गका जगप्रतरमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उतना देवराशिका प्रमाण है । इस वचनसे उत्कृष्ट

---

१ अ. प्रतौ निरस्यिति इति पाठः   २ अ. क. प्रत्योः 'उस्सप्पिणीणमभावादो' इति पाठः ।

काऊण विसिट्ठस्स अजहण्णाणुक्कस्सस्स परूवणा कदा।

भवणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ३४ ॥

सुगमं।

असंखेज्जा ॥ ३५ ॥

पडिवक्खपडिसेहं काऊण सपक्खपदुप्पायणादो एदेण सुत्तेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो। तं पि असंखेज्जं परित्त-जुत्त-असंखेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं होदि। तत्थ वि अणप्पिदस्स पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३६ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो। जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जं पि पडिसिद्धं, तत्थ असंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो। संपहि अवसेसेसु दोसु अणप्पिदपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेडीओ ॥ ३७ ॥

असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध करके शेष रहे अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातकी प्ररूपणा की गई है।

भवनवासी देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ॥ ३४ ॥

यह सूत्र सुगम है।

भवनवासी देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात हैं ॥ ३५ ॥

प्रतिपक्षका निषेधकर स्वपक्षका प्रतिपादन करनेसे इस सूत्रके द्वारा संख्यात और अनन्तका प्रतिषेध किया गया है। वह असंख्यात भी परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात और असंख्यातासंख्यातके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमेंसे भी अविवक्षित असंख्यातके प्रतिषेधार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा भवनवासी देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंसे अपहृत होते हैं ॥ ३६ ॥

इसके द्वारा परीतासंख्यात और युक्तासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है। इसके साथ जघन्य असंख्यातासंख्यातका भी प्रतिषेध हो जाता है, क्योंकि, उसमें असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंका अभाव है। अब अवशेष दो असंख्यातासंख्यातोंमेंसे अविवक्षितके प्रतिषेधार्थ उत्तर सूत्र है—

क्षेत्रकी अपेक्षा भवनवासी देव असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण हैं ॥ ३७ ॥

एदेण सुत्तेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो, लोगाणमणिद्देसादो[1]। असंखेज्जाओ सेडीओ वि अणेयभेयभिण्णाओ, तण्णिण्णयउप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

पदरस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३८ ॥

एदेण जगपदरस्स दुभाग-तिभागादीणं पडिसेहो कदो। जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो वि अणेयभेयभिण्णाओ त्ति तत्थ णिच्छयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

तासिं सेडीणं विक्खंभसूची अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण ॥ ३९ ॥

सूचिअंगुलं तस्सेव पढमवग्गमूलेण गुणिदं सेडीणं विक्खंभसूची होदि। सेसं सुगमं।

वाणवेंतरदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ४० ॥

सुगमं।

असंखेज्जा ॥ ४१ ॥

इस सूत्रके द्वारा उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, यहां लोकोंका निर्देश नहीं है। असंख्यात जगश्रेणियां भी अनेक प्रकारकी हैं, अतः उनके निर्णयोत्पादनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं–

उक्त असंख्यात जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ ३८ ॥

इससे जगप्रतरके द्वितीय भाग तृतीय भागादिकोंका प्रतिषेध किया गया है। जगप्रतरका असंख्यातवां भाग भी अनेक प्रकारका है, अतः उनमें निश्चयजननार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं–

उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कम्भसूची सूच्यंगुलको सूच्यंगुलके वर्गमूलसे गुणित करनेपर जो लब्ध हो उतनी है ॥ ३९ ॥

सूच्यंगुलको उसीके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करनेपर उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कम्भसूची होती है। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

वानव्यन्तर देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ॥ ४० ॥

यह सूत्र सुगम है।

वानव्यन्तर देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात हैं ॥ ४१ ॥

---

१ अ. क. प्रत्योः लोगाणमणिद्दे इति पाठः।

२ मू. प्रती भिण्णाओ इति पाठः

एदेण संखेज्जाणंताणं[1] पडिसेहो कदो। असंखेज्जं पि परित्त-जुत्त-असंखेज्जा-संखेज्जभेएण तिविहं तत्थ। अणप्पिदपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ४२ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स य पडिसेहो कदो, तत्थ असंखेज्जासंखेज्जाणमोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो। इदरेसु दोसु अणप्पिदपडिसेहट्ठ-मुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण पदरस्स संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण ॥ ४३ ॥

तप्पाओग्गसंखेज्जजोयणसदं वग्गिय तेण जगपदरे ओवट्टिदे वाणवेंतरदेवाणं पमाणं होदि। सेसं सुगमं।

जोदिसिया देवा देवगदिभंगो ॥ ४४ ॥

इसके द्वारा संख्यात व अनन्तका प्रतिषेध किया गया है। असंख्यात भी परीता-संख्यात, युक्तासंख्यात और असंख्यातासंख्यातके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमें अविवक्षित असंख्यातके प्रतिषेधार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वानव्यन्तर देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंसे अपहृत होते हैं ॥ ४२ ॥

इस सूत्र द्वारा परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात और जघन्य असंख्यातासंख्यातका भी प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि, उनमें असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंका अभाव है। अब इतर दो असंख्यातासंख्यातोंमें अविवक्षितके प्रतिषेधार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा वानव्यन्तर देवोंका प्रमाण जगप्रतरके संख्यात सौ योजनोंके वर्गरूप प्रतिभागसे प्राप्त होता है ॥ ४३ ॥

तत्प्रायोग्य संख्यात सौ योजनोंका वर्ग करके उससे जगप्रतरके अपवर्तित करनेपर वानव्यन्तर देवोंका प्रमाण होता है। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

ज्योतिषी देवोंका प्रमाण देवगतिके समान है ॥ ४४ ॥

---

1 अ. क. प्रत्योः 'असंखेज्जाणंताणं' इति पाठः।